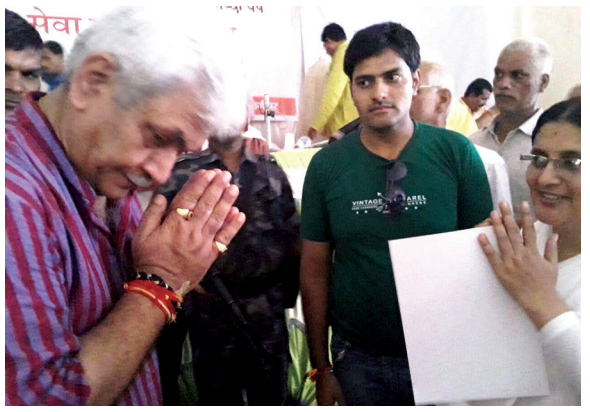

गाज़ीपुर-उ.प्र.। ब्र.कु. निर्मला को उनके समाज के प्रति उत्कृष्ट एवं नि:स्वार्थ सेवाओं के लिए प्रशंसा पत्र देने के पश्चात् उनका अभिवादन करते हुए मनोज सिन्हा,मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर रेलवेज़ एंड कम्युनिकेशन।

आगरा-सिकंदरा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् सांसद चौधरी बाबूलाल को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु.गीता।

वाराणसी-उ.प्र.। पॉपुलर हॉस्पिटल में 'योग साधना ध्यान कक्ष' का उद्घाटन करते हुए विधायक सौरव श्रीवास्तव, ब्र.कु. चन्दा, ब्र.कु. ओ.एन. उपाध्याय, पॉपुलर हॉस्पिटल ग्रुप के चेयरमैन डॉ. ए.के. कौशिक तथा पॉपुलर हॉस्पिटल की प्रबन्ध निदेशक डॉ. किरण कौशिक।

हाजीपुर-बिहार। नवरात्रि के अवसर पर चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एस.डी.ओ. रविन्द्र कुमार, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. आरती तथा अन्य।

उदयपुर-राज.। किसान सशक्तिकरण अभियान कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शशीकान्त,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रीटा, रमेश अमेटा, असिस्टेंट डायरेक्टर,कृषि विस्तार, ब्र.कु. सुमन्त,माउण्ट आबू, ब्र.कु. कनु, सोशल एक्टीविस्ट-मैजीशियन,अहमदाबाद।

फतेहाबाद-हरियाणा। कार्यक्रम के दौरान सैनिकों को ईश्वरीय संदेश देते हुए सीता।

परमात्मा सर्व गुणों का सागर, ना कि निर्गुण

- गतांक से आगे...

भगवान धर्म क्षेत्र और कुरुक्षेत्र के विषय में स्पष्ट करते हैं कि धर्मक्षेत्र में यथार्थ् ज्ञान-युक्त कर्म करने के आधार कौन-से हैं? जो सद्गुण हैं, वही उसके ज्ञान-युक्त कर्म करने के या धर्म क्षेत्र में प्रवृत्त होने के आधार हैं। जैसे कि विनम्रता, दंभहीनता, अहिंसा, सहनशीलता, सरलता, आज्ञाकारिता, पवित्रता, स्थिरता, आत्म-संयम, इंद्रिय तृप्ति के विषयों का परित्याग, निरहंकारी, वैराग्य, अनासक्त, नष्टोमोहा, हर परिस्थिति में संतुलित, अनन्य अव्यभिचारी भक्ति भाव, एकांतवासी, उपरामता, आत्म-अनुभूति एवं परमात्म-अनुभूति करने की इच्छा, ये सारे ज्ञान-युक्त कर्म करने के आधार या धर्म क्षेत्र की प्रवृत्ति को बढ़ाने के आधार हैं।

फिर भगवान ने कहा कि अज्ञेय परमपुरुष के विषय में सुनो। आत्मा के अपने क्वालिफिकेशन्स हैं, परमात्मा के अपने हैं। परमात्मा के विषय में और स्पष्टीकरण भगवान आगे इस अध्याय में करते हैं।

परमात्मा इंद्रियातीत हैं, जैसे कि मनुष्यात्माओं को स्थूल इंद्रियाँ होती हैं। परमात्मा इंद्रियों से परे है, अतीत है। वो निर्गुण एवं सर्वगुणों के सागर हैं। अब यहाँ एक विरोधाभास आता है कि वो निर्गुण भी हैं और सर्वगुणों के सागर भी हैं। निर्गुण का अगर शाब्दिक अर्थ लिया जाए, तो निर्गुण माना जिसमें कोई गुण नहीं है। लेकिन फिर भी वो सर्वगुणों का सागर है। ये कैसे हो सकता है? निर्गुण और सर्वगुण, निर्गुण माना जिसके अंदर मनुष्य सदृश्य गुण नहीं है, लेकिन जो गुणों में अनंत है। उस रूप में उसको कहा निर्गुण।

जैसे परमात्मा को निराकार कहा, निराकार का अगर शाब्दिक अर्थ लिया जाए तो जिसका कोई आकार नहीं है। लेकिन परमात्मा का यदि कोई आकार नहीं तो बिना आकार के तो कोई चीज़ इस संसार में होती ही नहीं है। हवा है, जो दिखाई नहीं देती है। लेकिन फिर भी उसका नाम और आकार है। एक चित्रकार को अगर चित्र निकालना हो और उसको चक्रवात तूफान दिखाना हो तो दिखा सकता है कि नहीं? दिखा सकता है। जिस हवा का आकार नहीं है, उसको भी एक चित्रकार अपने चित्र में ढ़ाल देता है कि चित्र देखकर के कहेंगे बड़ी तूफानी हवा चल रही है। शांत प्रकृति दिखानी हो तो भी दिखा सकता है। जैसे हवा चल ही नहीं रही है, जैसे पत्ता भी हिल नहीं रहा है। पूरा प्रतिबिंब पानी के अंदर नज़र आता है। जो हवा का आकार नहीं है, उसको भी चित्रकार अपने चित्र के अंदर ढ़ाल सकता है। तो क्या परमात्मा का स्वयं का नाम, रूप व आकार नहीं होगा? निराकार का भाव यहां है कि जिसका आकार मनुष्य सदृश्य नहीं है। उस अर्थ में कहा है निराकार। निर्गुण माना जिसके अंदर मनुष्य सदृश्य गुण नहीं हैं लेकिन जो गुणों में अनंत है।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

फिर आगे कहते हैं, सूक्ष्म होने के कारण वो भौतिक इन्द्रियों के द्वारा जानने वा देखने से परे है। इन चर्म चक्षुओं से उसको देखा नहीं जा सकता है या जाना नहीं जा सकता है। लेकिन फिर भी वो न्यारा और प्यारा है। वह संसार में उत्पत्ति, पालना और संहार का करनकरावनहार है। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु और महेश के माध्यम से वो अपना कार्य कराता है। खुद करता नहीं है, लेकिन कराता है।

इसलिए उसको करनकरावनहार कहा जाता है। वो प्रकाशमान है, पूर्ण ज्ञान स्वरूप और ज्ञान का सागर है और ज्ञान का लक्ष्य है। इसे केवल मेरे भक्त ही पूरी तरह समझ सकते हैं और मेरे स्वभाव को प्राप्त कर सकते हैं, ऐसा भगवान कहते हैं। - क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

परखता तो वक्त है,
कभी हालात के रूप में,
कभी मजबूरियों के रूप में।
भाग्य तो बस आपकी
काबिलियत देखता है!

हमेशा खुश रहना चाहिए,
क्योंकि परेशान होने से
कल की मुश्किल दूर नहीं होती,
बल्कि आज का सुकून
भी चला जाता है।

जो सफर की शुरुआत करते हैं,
वे मंज़िल भी पा लेते हैं,
बस, एक बार चलने का
हौसला रखना ज़रूरी है,
क्योंकि, अच्छे इंसानों का तो
रास्ते भी इन्तज़ार करते हैं...।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें
आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

'Peace of Mind' channel

TATA Sky 1065 airtel digital TV 678
Videocon d2h 497 Reliance Digital TV 640
FASTWAY GTPL DEN hathway UCN DigiCable SITI

Free to Air
ABS FREE DTH
KU Band with MPEG (DVB-S/S2) Receiver
LNB Freq. - 10600/10600
Tans Freq. - 11911
Polarization - Horizontal
Symbol - 44000
22k - On
Satellite - ABS-2; 75° E

Contact
Brahma Kumaris, 2nd Flr Anand Bhavan, Shantivan, Sirohi, Abu Rd, Raj-307510
+91 9414151111
+91 8104777111
info@pmtv.in
www.pmtv.in

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए

सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये ।

विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।